आचार्य
श्री नरेंद्र मोदी

ACHARYA (CHANCELLOR)
SHRI NARENDRA MODI

उपाचार्य
प्रोफेसर विद्युत चक्रवर्ती

UPACHARYA (VICE-CHANCELLOR)
PROF. BIDYUT CHAKRABARTY

विश्वभारती
VISVA-BHARATI

(Established by the Parliament of India under
Visva-Bharati Act XXIX of 1951
Vide Notification No. : 40-5/50 G.3 Dt. 14 May, 1951)

संस्थापक
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

FOUNDED BY
RABINDRANATH TAGORE

शांतिनिकेतन - 731235
SANTINIKETAN - 731235
जि.वीरभूम, पश्चिम बंगाल, भारत
DIST. BIRBHUM, WEST BENGAL, INDIA
फोन Tel: +91-3463-262 451/261 531
फैक्स Fax: +91-3463-262 672
ई-मेल E-mail : vice-chancellor@visva-bharati.ac.in
Website: www.visva-bharati.ac.in

सं./No._____ दिनांक/Date._____

मेरा सातवाँ संदेश
1 अगस्त, 2020

विश्वभारती पर आश्रित एवं इससे लाभान्वित मेरे सहयोगी, छात्र और अन्य हितधारकगण!

मुझे यह संदेश खंडन के साथ शुरू करने दें। मैं इस संदेश को प्रस्तुत करते हुए खुश भी हूँ और दुखी भी। खुश क्योंकि मेरे संदेशों ने जनता का ध्यान आकर्षित किया है, खासकर उन लोगों का,जो गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के विचारधारा को पसंद करते हैं चाहे उन्हें विचारधारा अच्छी लगती हो या फिर इससे उन्हें लाभ मिला हो। दुःख की बात यह है कि जो लोग मेरे संदेशों पर टिप्पणी कर रहे हैं (उनमें से दो आश्रमिक प्रमुख हैं जो अपनी जीविका कमाने के लिए कुछ विशिष्टताओं के साथ विश्वभारती से जुड़े थे), ऐसा प्रतीत होता है कि वे संदेश को पूरी तरह नहीं समझ सके। प्रत्येक संदेश कम से कम 2000 शब्द का है, और सब मिलाकर लगभग 12000 शब्द हैं। गुरुदेव टैगोर की विरासत के स्वयंभू संरक्षकों द्वारा की गई टिप्पणियों में धैर्य की कमी भी स्पष्ट है, जो इस बात की पुष्टि करती है कि "अधूरा ज्ञान पूर्ण अज्ञानता की तुलना में कहीं अधिक खतरनाक है"। मैं उन लोगों से आग्रह करूंगा जो विश्वभारती और इसकी समृद्ध विरासत के साथ अपनी तथाकथित स्वाभाविक आत्मीयता (जिसका कारण नहीं मालूम या जो कभी सार्वजनिक नहीं किया गया है) दिखाने के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं, अपने कुछ कीमती समय निकालकर मेरे संदेशों को पढ़ें जो सबके लिए उपलब्धहै।मैं उन लोगों से भी निराश हूं जो आश्रम के लिए चिंता करने का दावा करते हैं (कम से कम मीडिया में अपने सार्वजनिक बयानों में) पर वर्ष के प्रमुख कार्यक्रम (पौष मेला और बसंत उत्सव) के बाद विश्वभारती के हाल के गतिविधियों में शायद ही दिखाई देते हैं।

मैं यह दोहराता हूं कि मेरी साप्ताहिक संदेशों का उद्देश्य उन परिस्थितियों को समझना है जिसके कारण नैक मूल्यांकन में विश्वभारती के बी+ और एनआईआरएफ रैंकिंग में पचासवाँ स्थान मिला है। मैं कारणों का पता

लगाने की कोशिश कर रहा हूं क्योंकि मुझे लगता है कि जो लोग सुनहरे अंडे देने वाली इस लोक प्रसिद्ध हंस के कारण जीवनयापन करते हैं ,सभी भावी पीढ़ी के लिए (यह विश्वभारती सबका है) जिम्मेदार है। क्या हमें विरासत में मिली विश्वभारती का गौरव बनाए रखने में सफलता मिली है है? इसका उत्तर शायद "नहीं" है क्योंकि,जैसा कि मैंने अपने पिछले संदेशों में लिखा है; ये कारण सुनने में अप्रिय हैं।खासकर उन लोगों के लिए जो जानबूझकर नुकसान पहुँचाने के लिए शामिल हुए हैं। अगर ये विश्वभारती को पूरी तरह से नष्ट नहीं करते हैं। मैंने पहले ही इसे "बीरभूम में एकमात्र उद्योग" के रूप में वर्णित किया है। कई कुलपतियों ने सेवानिवृत्ति एवं विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद विश्वभारती के तेजी से गिरते स्तर का दस्तावेज़ सार्वजनिक किया। इसके बजाय, मैंने विश्वभारती परिवार के सदस्य रहते कुलपति के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान इन संदेशों को लिखना और सार्वजनिक करना चुना। । मैंने ऐसा यह सोचकर किया है ताकि विश्वभारती के अभ्युदय में बाधा पहुँचाने वाली हर समस्याओं पर खुलकर चर्चा की जा सके। मेरा उद्देश्य, निश्चित रूप से, उन लोगों को अलग करना नहीं है, जिनके पास संस्था के लिए सच्चा स्नेह है और इसके हित में काम करते हैं। मैं इसके बजाय उन पाखंडी व्यक्तियों को बाहर करना चाहता हूं, जिनका विश्वभारती हित में कोई योगदान नहीं है।

ये संदेश किसी भी तरह से संस्था की छवि धूमिल करने का प्रयास नहीं हैं, क्योंकि मुझे पता है कि इससे इस महान संस्थान का नुकसान होगा जिसका मैं कुलपति हूँ। । मेरे द्वारा लिखे गए ये संदेश विशेष रूप से सामूहिक आत्मनिरीक्षण के प्रयास हैं,जो समय की जरूरत है। आइए याद करें कि कैसे विश्वभारती ज्ञान के प्रसार के लिए एक अद्वितीय केंद्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कि हमारे कई पूर्ववर्तियों द्वारा कड़ी मेहनत के साथ दशकों से विकसित हुआ है। आश्रम में इत्मीनान से देखने से यह पता चलेगा।

हमें क्या करना होगा? यहाँ एक दूसरा खंडन है। मैंने, क्या करना है और क्या नहीं करना है,की सूची तैयार की है जो संपूर्ण नहीं है। मैं अपने सहकर्मियों, छात्रों और विश्वभारती के अन्य हितधारकों को इस सूची में जोड़ने के लिए आगे आने के लिए आमंत्रित करता हूं, जो मैं उन सभी के साथ साझा करूंगा जो विश्वभारती को पहले की तरह परम उत्कृष्टता हासिल करने के लिए सहयोग करना चाहते हैं।

1) **भागीदारी:** विश्वभारती अन्य विश्वविद्यालयों से हटकर है क्योंकि यह एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करता है। हमने आधिकारिक सप्ताहांत बुधवार-गुरुवार को शनिवार-रविवार में बदल दिया है। कई बैठकों में इस फैसले के पक्ष में दो तर्क पेश किए गए थे जिनमें अकादमिक परिषद और कार्यकारी परिषद के अलावा शिक्षण और गैरशिक्षण कर्मचारी और छात्र शामिल थे। (क) यह शिक्षकों और गैरशिक्षण कर्मचारियों दोनों द्वारा उठाया गया था कि सप्ताह के कार्यदिवसों में, बुधवार और गुरुवार को, जब वे घर वापस जाते हैं, तो अपने जीवनसाथी और बच्चों के साथ शायद ही उनकी कोई बातचीत होती है, क्योंकि वे या तो काम पर होते हैं या स्कूल में। (ख) चूंकि बुधवार को छुट्टी रहती है, अधिकांश शिक्षक, गैरशिक्षण कार्मिक सदस्य और ऐसे छात्र जिनके पास साप्ताहिक अवकाश के दिन अन्य काम रहते हैं, वे मंदिर नहीं जा सकते। ये दोनों तर्क

उचित हैं। शनिवार और रविवार को साप्ताहिक बंद की घोषणा के बाद, हमने देखा कि दूसरा तर्क सही नहीं था, क्योंकि मंदिर आने की इच्छा ज्यादातर लोगों के लिए एक मौखिक प्रतिबद्धता थी। बुधवार को नियमित रूप से मंदिर में आयोजित प्रार्थना से यह पता चलता है। परिसर में लगभग 15,000 सदस्यों में से, बुधवार को मंदिर में सामूहिक प्रार्थना में बहुत कम संख्या में लोग शामिल होते हैं। अब, निश्चित रूप से, कोविद-19 प्रतिबंधों के कारण, संख्या वैध रूप से घट गई है क्योंकि छात्र परिसर में नहीं हैं, हालांकि शिक्षकों और गैर-कर्मचारी सदस्यों से उपस्थित होने की अपेक्षा करना अनुचित नहीं होगा।

2) ऐसी ही स्थिति **बैतालिक** (सुबह की मण्डली की बहुत सीमित संख्या) में रहती है जो कि आश्रम में विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान होती है, जो रबींद्रिक परंपरा के स्तंभ हैं। मेरे निरंतर अनुरोधों से शांतिनिकेतन और श्रीनिकेतन दोनों से भागीदारी में थोड़ी वृद्धि हुई।मेरे अधिकांश सहयोगियों ने अपनी अनुपस्थिति के दौरान बैतालिक के लिए सुबह जल्दी उठने में असमर्थता जताई, हालांकि हमारे पास एक वर्ष में बहुत कम बैतालिक होते हैं। इसके अलावा, ऐसे कई अवसर हैं जब मेरे सहकर्मी खुशी-खुशी सुबह जल्दी उठते हैं, उदाहरण के लिए, जो गणदेवता एक्सप्रेस से शांतिनिकेतन लौटते हैं।यह कोलकाता से सुबह-सुबह छूटती है। मुझे बताया गया है कि कई सहकर्मी हैं जो इस ट्रेन से लगभग हर हफ्ते आते हैं। इसलिए यह मानता हूँ कि उन्हें बैतालिक के लिए साल भर में सुबह में चार या पांच बार उठने में दिलचस्पी नहीं है।

3) पौष मेला: मैं 2019 के पौष मेले पर ध्यान केंद्रित करूंगा, क्योंकि इसमें मैं शुरू से शामिल था। मेला के उद्घाटन से दस दिन पहले हमने शिविर कार्यालय की स्थापना की थी; पूरे कुलपति सचिवालय को कैंप कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया ताकि स्टॉल और संबंधित बुनियादी ढांचे के निर्माण पर निरंतर निगरानी रखी जा सके। बता दें कि यह मेला विशेष था। कई दशकों में यह पहला मेला था जो पूरी तरह से विश्वविद्यालय के शिक्षकों, छात्रों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों और पेंशनरों द्वारा आयोजित किया गया था। स्थानीय व्यवसायियों के कड़े विरोध के बीच, नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशानुसार मेला आयोजित करने के लिए दिन रात काम करने वाले सहयोगियों के एक बहुत छोटे समूह द्वारा इस विशाल कार्य में मेरी मदद की गई थी।जिस तरह से मेला का आयोजन किया जा रहा था,मेरे सहयोगियों के जेब से भी खर्च हुआ था। अब मुझे एक आँकड़ा प्रस्तुत करने दें: लगभग 453 सहयोगी कार पास लेने के लिए शिविर में आए, लेकिन जब हमने स्वयंसेवकों को मेला के सुचारू संचालन में सहायता करने के लिए बुलाया, तो मुश्किल से पचास सहयोगियों ने फोन रिसीव किया और 100 सुरक्षाकर्मियों के साथ काम करने के लिए आए। सुरक्षाकर्मी प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा भेजे गए थे और सत्य साईं ट्रस्ट के 180 से अधिक स्वयंसेवक थे जिन्होंने मेला की पूरी अवधि में नियमित रूप से मेला मैदान की सफाई की।

4) स्वामित्व: नवंबर, 2018 में विश्वभारती में कार्यग्रहण करने के बाद, मेरे लिए सबसे हैरानी की बात थी कि जो लोग जीविकोपार्जन हेतु विश्वभारती पर निर्भर थे उनमें विश्वभारती के प्रति स्वामित्व प्रेम का अभाव

था। अपने कर्मचारियों और उन व्यापारियों के लिए आय का एक निरंतर स्रोत होने के नाते, जिनके व्यापारिक उद्यम पर्यटकों पर निर्भर हैं, जो पूरे विश्वभारती परिसर में एक अर्ध रबींद्रिक तीर्थयात्रा के लिए पूरे वर्ष आते हैं;विश्वविद्यालय हर किसी के लिए उपयोगी है। हालांकि, विश्वविद्यालय के लिए वास्तविक लगाव की कमी है,इसकी केवल सराहना की जाती है और इसके लिए लोग खड़े होते हैं जब तक उनका स्वार्थ सिद्ध होता है। सहकर्मियों के बीच भवन/विभागों में अक्सर होने वाले झगड़े को कोई कैसे समझाता है, जो कुलपति और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को हस्तक्षेप करना पड़ता है?

मैं बताता हूँ कि स्वामित्व से मेरा क्या तात्पर्य है। जब भी विश्वभारती के गौरव को बनाए रखने या उसे प्राप्त करने के लिए लड़ाई छिड़ती है, तो उग्र विरोध अवश्यसंभावी है। अब तक लेखापरीक्षा आपत्तियों में इस लक्ष्य की दिशा में सिर्फ पारस की घटती संख्या को जाँचने के अलावा कोई कार्य नहीं किया गया है। इसके अलावा, यह प्रशासन भ्रष्टाचार के रास्तों को बंद करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसलिए अब उन कर्तव्यों का निर्वहन किए बिना जीपीएफ के रूप में लाखों रुपये पाने की अनुमति नहीं होगी, जिसके लिए किसी को यह लाभ दिया जाता है।

विश्वविद्यालय के कामकाज में आने वाले बदलावों के बारे में जानकारी होने के बावजूद, रबींद्रिक परंपराओं के स्व-घोषित संरक्षक को गुरुदेव की सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि को वास्तविक बनाने के लिए हमारे रबींद्रिक विरोधी होने में देर नहीं लगती। इसलिए यह अस्वाभाविक नहीं है कि हम उन्हें उक्त रचनात्मक प्रयासों के दौरान कभी नहीं पाते हैं, जैसे कि विश्वविद्यालय परिसर के आसपास के ग्रामीणों,कोरोनोवायरस महामारी के कारण अपनी आजीविका खो चुके लोगों को राहत देते समय या हमारे जिले के शहीद परिवार के लिए धन जुटाते समय या जब हम कैंपस में पार्थेनियम को उखाड़ने में लगे थे। कौतूहलवश, जब ये गतिविधियाँ होती हैं, विश्वभारती के ये "संरक्षक" अपने जेब से खर्च नहीं करना चाहते और उन्हें अपने स्वास्थ्य की चिंता होती है।उनके मना करने का अपना तरीका है। कुलपति को भारत के माननीय राष्ट्रपति, भारत के माननीय प्रधान मंत्री और माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री के शिकायती के पत्रों के साथ धमकी दी जाती है। मेरे पास स्व-घोषित रबींद्रिकों के लिए एक सम्मानजनक सुझाव है: यदि आपको प्रशासन के इरादों और कार्यों के बारे में जानकारी नहीं मिल रही है, तो कृपया नियमित रूप से प्रसारित मेरे संदेशों के लिए विश्वभारती वेबसाइट देखें। यदि, संदेशों को समग्र रूप से पढ़ने के बाद भी हमारी निष्ठा पर संदेह करते हैं,तो कृपया हमारे साथ आकर काम करें, ताकि आप स्वयं देख सकें कि हम विश्वभारती के हित में सही मायने में कैसे काम करते हैं।

5) स्वत्व : जब मैंने 2019 में विश्वभारती में कार्यग्रहण किया, तो मैं हमेशा सहयोगियों के झुंड से घिरा रहता था, जिसने मेरे एक सहयोगी को यह कहने के लिए प्रेरित किया, "सर, आपके पास सीएजी और

सीएएस हैं।" मैं संक्षिप्त रूप नहीं समझ सका। मेरे सहकर्मी ने समझाया कि सीएजी वे हैं जो कैग द्वारा भेजी गई ऑडिट टीम द्वारा तैयार ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार, उन्हें अवैध तरीके से लाभ प्राप्त हुआ है। जबकि सीएएस उन व्यक्तियों को उल्लेखित करता है, जो पदोन्नति की उम्मीद में कुलपति के आसपास घूमते हैं। इस स्पष्टीकरण को सुनकर, धीरे-धीरे बातें सामान्य हो गईं। मुझे एहसास हुआ कि शायद यही कारण है कि 10 मार्च, 2019 को गांधी पुण्यह के दिन बड़ी संख्या में सहकर्मी आए थे। यह वही दिन था जब सीएएस पदोन्नति के लिए साक्षात्कार आयोजित किए गए थे। मेरी यह परिकल्पना कि ये सहकर्मी केवल दिखावे के लिए आए थे,की पुष्टि इस बात से हुई कि जब वे 2020 में गांधी पुण्यह के दिन नहीं दिखे।

6) प्रतिबद्धता: किसी भी सार्वजनिक उद्यम की तरह, एक विश्वविद्यालय समान सोच रखने वाले लोगों के सामान्य मिशन पर मिलकर काम करने से फलता है।जब तक सभी अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते,यह कार्य असंभव लग सकता है। विश्वभारती की समृद्ध विरासत के लाभार्थियों से जो अपेक्षा की जाती है, वह उन मूल्यों और आदर्शों के लिए उनकी प्रतिबद्धता है, जो गुरुदेव ने शिक्षा के इस महान केंद्र का निर्माण करते समय व्यक्त किया था। मैंने जिस प्रतिबद्धता की बात की है, वह तथाकथित रबींद्रिक मूल्यों की केवल मौखिक प्रशंसा के लिए बहुत कम है; इन्हें साथ मिलकर जमीनी स्तर पर लोगों के साथ काम करने, सक्षम बनाने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए सब कुछ करना है। हम सभी को शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के अद्वितीय मिश्रण को बनाए रखने और मजबूत करने में एक भूमिका निभाने की आवश्यकता है जिसमें विश्वभारती ने हमेशा प्रतिनिधित्व किया है। स्वयं गुरुदेव के शब्दों में यह कहना सही होगा: 1940 के दशक में निबंधकार सजनी कांटो दास के साथ अपने संवाद में, उन्होंने उन लोगों को सीधे तौर पर दोषी ठहराया, जो पक्षपातपूर्ण लाभ हासिल करने के लिए, सामाजिक उत्थान के नाम पर विभाजनकारी राजनीति करते थे।
।

7) कड़ी मेहनत: कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है,बताने की जरूरत नहीं है। दुख की बात है कि सामान्य चलन से पता चलता है कि एक छात्र अपने डॉक्टोरल / पोस्ट-डॉक्टोरल अध्ययन में कड़ी मेहनत करता है, पर एक बार एक स्थायी शैक्षणिक स्थिति प्राप्त करने के बाद उनका स्तर नाटकीय रूप से गिर जाता है। इस घटना की सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत व्याख्याओं में से एक यह है कि जब किसी को भारत में विशेष रूप से कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्रदान करने के लिए नौकरी मिलती है, तो उन्हें अपनी विद्वता सिद्ध करने की जरूरत नहीं रह जाती। शिक्षाविदों के मामले में कोई वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट नहीं होती जैसा कि अधिकारी वर्ग के मामले में होती है।उदाहरण के लिए,कड़े आकलन जो भारतीय शासन के कठोर दायरे में आता है। हाल ही में, यूजीसी ने एपीआई (अकादमिक प्रदर्शन संकेतक) स्कोर यह पता लगाने के लिए शुरू किया है जो नई नियुक्ति और उच्च रैंक पर पदोन्नति के लिए पात्र होगा। हालांकि इस नए मानदंड ने बहुत सारे योग्य शोधकर्ताओं को निरंतर शोधरत रहने के लिए प्रेरित किया है, लेकिन दुर्भाग्य से उन लोगों के लिए भी चरण निर्धारित किया है जो अत्यधिक अविश्वसनीय माध्यम से एपीआई अंक अर्जित करने के लिए वास्तव में मूल्यपरक अनुसंधान नहीं करते हैं। विश्वभारती में अपने अनुभव के संदर्भ में इसे स्पष्ट करता हूं।

जैसे ही मैंने कार्यग्रहण किया, मैंने अपने सहयोगियों को आश्वासन दिया कि सीएएस पदोन्नति मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी जो मैंने पूरा किया।सड़सठ सहकर्मियों में से उनसठ को नियत प्रक्रिया का सख्ती से पालन करके पदोन्नत किया गया। हाल ही में, मेरा ध्यान उन कई मामलों की ओर गया जहाँ सफल उम्मीदवार की एपीआई की गिनती ठीक से नहीं की गई थी, क्योंकि कथित रूप से चोरी की गई साहित्यिक प्रकाशनों को गिनती में शामिल करने की बात कही गई थी। इसके अलावा, विज्ञान भवन से इतर पदोन्नति के तीन मामले हैं जो पहले की व्यवस्था में एपीआई की गलत गणना करके किया गया था। मेरे संज्ञान में लाया गया है कि जिन सहयोगियों को गलत तरीके से पदोन्नत किया गया था,वे दूसरे विश्वविद्यालय में कक्षाएं लेकर अंक प्राप्त करते थे, जिसे सेमिनार में उपस्थिति के रूप में दिखाया गया था। इस मामले की जाँच के लिए, एक जांच समिति गठित की गई। लेकिन इसे उन मामलों में अपना काम पूरा नहीं करने दिया गया क्योंकि विश्वभारती में प्रशासनिक निर्णय लेने में गुंडों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। मैंने कोशिश की है, लेकिन इस कारण से, कागजात प्राप्त करने में विफल रहा। यहां तक कि जांच में शामिल हाल ही में एक सेवानिवृत्त सहकर्मी ने भी कागजात दिलाने में मेरी मदद करने से इनकार कर दिया, क्योंकि कथित तौर पर उन्हें उन लोगों द्वारा धमकी दी गई थी, जिन्होंने एपीआई की गणना में गैरकानूनी और अनैतिक तरीकों का सहारा लेकर अनुचित लाभ प्राप्त किया था। फिर भी, एमएचआरडी के निर्देश के अनुसार इन मामलों की जाँच जारी रहेगी। अब, यदि उच्च अधिकारियों द्वारा प्रतिकूल निर्णय लिया जाता है, तो यह न केवल विश्वभारती की छवि खराब करेगा, बल्कि इसके भविष्य को भी खतरे में डालेगा, इसके अलावा इन विसंगतियों को दूर करने के लिए जिन लोगों के खिलाफ निर्णय लिया जाएगा उनके लिए बहुत दुखदायी होगा।

उल्लेखनीय है कि एमएचआरडी ने मेरे एक पूर्ववर्ती प्रोफेसर सुशांत दत्त गुप्त के समय कथित तौर पर 56 अवैध नियुक्तियों की एक सूची तैयार की थी। आरोप लगाया गया था कि इस सूची के उम्मीदवारों को सभी नियमों और विनियमों का उल्लंघन करके भर्ती किया गया था।मेरे कार्यग्रहण के बाद, अवैध भर्ती की संख्या 24 रह गई थी और मुझे इन मामलों में जाँच करने के लिए कहा गया। मैंने एमएचआरडी के निर्देशानुसार जाँच शुरू कर दी है। प्रारंभिक रिपोर्ट से पता चलता है कि प्रथम दृष्टया, दुर्भाग्यवश कई विसंगतियाँ हैं जो सहायक प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर के स्तर पर विश्वविद्यालय की नौकरियों के लिए विशिष्ट उम्मीदवारों का चयन करते समय थीं। यहां भी, परिणाम सुखद होने की संभावना नहीं है अगर यह साबित हो जाता है कि ये नियुक्तियां अवैध रूप से की गई थीं। विशेष रूप से कुलपति, और सामान्य तौर पर प्रशासन में उनके सहयोगी,जो लाभ से वंचित हो जाएंगे ,निश्चय ही निंदनीय है।

8) विविधता को समायोजित करने और आत्मसात करने की इच्छा: मेरे पाठकों को यह ज्ञात होगा कि वर्तमान विश्वविद्यालय प्रशासन ने मंदिर में आयोजित होने वाली साप्ताहिक प्रार्थनाओं के तौर तरीकों में काफी बदलाव लाए गए हैं। जिस परिवर्तन पर हम गर्व करते हैं, वह है विभिन्न पृष्ठभूमि से आचार्यों का चयन

। लॉकडाउन के बाद, हमारे साप्ताहिक मंदिर प्रार्थना में डॉक्टर एवं सफाई कर्मचारियों से लेकर सुरक्षा कर्मियों और पुलिस तक सभी कोविद-19 के खिलाफ लड़ रहे हैं। विश्वभारती के दुर्गम स्थानों को सबके लिए सुलभ बनाना हमारे मिशन का हिस्सा है जो गुरुदेव टैगोर ने जाति, धर्म और सामाजिक-आर्थिक खाई को नज़रअंदाज करते हुए अपने पड़ोसी गांवों के साथ विश्वभारती की संस्था को एकीकृत करके चलाया था। टैगोर के लिए, मंदिर सामुदायिकता और एकजुटता के लिए एक स्थान था क्योंकि इससे आध्यात्मिकता का प्रवाह होता था। हम आशा करते हैं कि जो आचार्य बनते हैं, हमारी खोज में विविधता लाने के लिए टैगोर की समावेशिता और बंधुत्व के लिए प्रयास करेगा।

9) समय के साथ आगे बढ़ने की इच्छा: इस संदेश में यह संभवत: सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है। इसे ऊपर बताए गए सभी बिंदुओं में उठाए गए व्यापक प्रबंधन के रूप में भी देखा जा सकता है।हाल में प्रशासन द्वारा उठाए गए कदम में हमारे सहयोगियों की चिंता अंतर्निहित है।उन्हें परिवर्तन का डर है।उन्होंने परिवर्तनको गलत अर्थ में समझा है न कि बेहतर के लिए प्रगति और विकास के अर्थ में। मुझे विश्वास है कि मुझे यह समझाने की आवश्यकता नहीं है कि यह रवैया कितना प्रतिगामी है। यह कहना पर्याप्त है कि विरासत कालातीत अखंड नहीं है; हम इसे हर दिन बनाते हैं। टैगोर ने विश्व-भारती के लिए एक ठोस नींव रखी; यह हमारे ऊपर है कि हम बदलते वक्त के साथ नम्रता से ग्रहणशील होते हुए संस्था को मजबूत करें।

इस संदेश ने यह रेखांकित किया है कि विश्वभारती को वैश्विक शैक्षणिक स्तर पर अपने सही स्थान पर वापस लाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। मुझे दृढ़ विश्वास है कि यह लक्ष्य प्राप्य है, बशर्ते हम सभी विश्वभारती के अतीत के गौरव को ध्यान में रखते हुए एक साथ बदलते परिस्थिति के प्रति ग्रहणशील हों। विश्वभारती की विरासत के प्रबंधक के रूप में, यह प्रशासन, शिक्षकों, छात्रों, पूर्व छात्रों और अन्य हितधारकों पर निर्भर है, विश्वविद्यालय के हित के मामलों में अपने स्वार्थ को न आने दें। आरोपित स्वार्थी व्यवहार को बदलने का समय आ गया है जिसके कारण विश्वभारती की अधोगति हुई है और यह लक्ष्यको नहीं प्राप्त कर पाया है।

कोविद-19 महामारी क्रूर प्रतीत होती है। हमें इस अदृश्य शत्रु का मुकाबला करने के लिए शारीरिक रूप से न सही,भावनात्मक रूप से एक साथ आना चाहिए। इसलिए, मैं भौतिक दूरी बनाए रखते हुए सामाजिक रूप से जुड़े रहने के लिए आप सभी से एक बार फिर आग्रह करूंगा। कृपया मास्क पहनें, और सुरक्षित रहें।

भरोसा रखें,

बिद्युत चक्रवर्ती

०१/०८/२०२०

बिद्युत चक्रवर्ती

•विश्वभारती•
शान्तिनिकेतन

Vice-Chancellor
Visva-Bharati
Santiniketan
West Bengal-731235
India